International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 15-05-2022, Accepted: 30-05-2022, Published: 16-06-2022
Volume 8, Issue 3, 2022, Page No. 40-42

साहित्य एवं विचार धाराओं का अंतर्संबंध

हेमा जोशी
अनुसंधित्सु, डी. एस. बी. कैम्पस, कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत

सारांश
साहित्य और इतिहास एक दूसरे के पूरक हैं परंतु उनमें सबसे बड़ा अंतर यह है कि जहां इतिहास भूतकालिक घटनाओं का तथ्यपरक संग्रहण है, वही साहित्य केवल तथ्यों का संग्रहण मात्र नहीं है। वह यथार्थ के साथ कल्पना के प्रयोग को भी समायोजित करता है। इतिहास व्याख्या करता है कि 'क्या हुआ?' वहीं साहित्य, क्या हुआ? के साथ क्या होना चाहिए था? क्या हो सकता था? या क्या होना चाहिए? इन सभी पहलुओं पर विस्तार से दृष्टि रख पाने में सक्षम है। साहित्य में विचार धाराओं का अपना एक अलग महत्व है परंतु कई आलोचक यह मानते हैं कि साहित्य और विचारधारा का गठबंधन साहित्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है। वे मानते हैं कि जब कोई साहित्यकार किसी विचारधारा से ऐसे जुड़ जाता है कि वह अतिवाद का शिकार हो जाता है तो उसकी सृजन क्षमता धीरे–धीरे कुत्सित होती जाती है और वह येन–केन प्रकारेण अपने एजेंडे को सहित्य के माध्यम से साधने का प्रयास करता है। जबकि कुछ विचारकों का मानना है कि यदि साहित्य दूध है तो विचारधारा चीनी के समान है। साहित्य में जब विचारधारा प्रवाहित होती है तो मीठे–मीठे दूध का आनंद मिलता है। साहित्य विचारधारा को बनाता है या विचारधारा साहित्य को बनाती है या यह दोनों मिलकर एक दूसरे को मजबूती प्रदान करते हैं या दोनों एक दूसरे को कमजोर करते हैं। ऐसे कई प्रश्नों के उत्तर के लिए एक विश्लेषणात्मक अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

मूल शब्दः विचारधारा (आईडियोलॉजी), मार्क्सवाद, समाजवाद, आधुनिकता, उत्तराधुनिकता, प्रगतिशील, अस्मिता विमर्श।

प्रस्तावना
साहित्य और विचारधारा में घनिष्ठ संबंध हैं। आचार्य बालकृष्ण भट्ट ने साहित्य की परिभाषा देते हुए एक निबंध लिखा था, 'साहित्य जनसमूह के ह्रदय का विकास है।' साहित्य में जो कुछ भी निहित है उसका संबंध जन से, जनसमूह से अवश्य होता है। जनसमूह की चेतना ही साहित्य में दृष्टिगोचर होती है। किसी भी साहित्य के रचनाक्रम में रचनाकार के विचारों एवं विचार धाराओं का भी प्रभाव दिखलाई पड़ता है। "वस्तुतः यह साहित्य की एक एकांगी परिभाषा है किंतु साहित्य और जनसमूहों के संबंधों पर प्रकाश डालती है। आचार्य शुक्ल इस परिभाषा को और विस्तार देते हुए साहित्य के अंतर्गत उस संपूर्ण वांग्मय को रखते हैं जिसमें अर्थबोध के अतिरिक्त भावोन्मेष और चमत्कारपूर्ण अनुरंजन हो तथा जिसमें ऐसे वांग्मय की विचारात्मक समीक्षा या व्याख्या हो।"[1] अतः कहा जा सकता है कि किसी भी वांग्मय की विचारात्मक व्याख्या साहित्य के अंतर्गत आती है। यहां यह आवश्यक नहीं है कि साहित्य केवल और केवल विचार धाराओं पर ही केंद्रित होता है। लेकिन हाँ साहित्य विचार धाराओं से प्रभावित अवश्य होता है। "विचारधारा किसी भी साहित्यकार के लिए जीवन और जगत की व्याख्या का औजार है। कोई भी सार्थक लेखन ऐसा नहीं हो सकता जिसमें जीवन और जगत की व्याख्या करने वाली कोई विचारधारा अनुस्यूत न हो। प्रत्येक साहित्य का अनिवार्यतः अपना वैचारिक पक्ष होता है।"[2]
साहित्य में विचार या विचार धाराओं का हस्तक्षेप हमेशा से ही रहा है, यद्यपि साहित्य में केवल विचार या विचार धाराओं का ही प्रभुत्व नहीं होता, इंद्रिय बोध और भावों का भी सानिध्य होता है। फिर भी साहित्य में विचार धाराओं का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। कोई भी लेखक, कवि, साहित्यकार अपनी रचनाओं में अपने रचनात्मक कौशल से अपनी विचारधारा को भी पाठक के समक्ष रखने का प्रयास करता है। उसका यह प्रयास उसे समाज में उस विचारधारा को पल्लवित, विकसित करने में सहायक होता है। वह अपनी रचनाओं, कृतित्व के माध्यम से पाठकों को अपने विचारों या विचारधारा से जोड़ने का प्रयास करता है।

सहित्य
"साहित्य में साहित्यकार शब्द चयन, शब्द गठन एवं बिंब निर्माण के लिए अपनी कल्पनाशीलता का उपयोग करता है किंतु यह कल्पना अनुभव जगत पर आधारित होती है। अतः हम कह सकते हैं कि साहित्य वैयक्तिक एवं काल्पनिक सर्जना होते हुए भी समाज एवं जगत के अंतरवाह्य की अभिव्यंजना है।"[3] हिंदी साहित्य के इतिहास को आदिकाल से वर्तमानकाल तक की यात्रा में अनेक प्रवृतियों से होकर गुजरना पड़ा है। वीरगाथाकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिक काल सभी कालखंडों की कुछ विशेष प्रवृत्तियां रही हैं, जिनके आधार पर उन्हें यह नाम दिया गया है। वीरगाथाकाल में जहां वीर रस से परिपूर्ण रचनाओं की प्रमुखता रही तो भक्तिकाल में भक्तिपूर्ण रचनाओं की। वहीं रीतिकाल में दरबारी कविता, नख–शिख वर्णन की प्रधानता रही तो आधुनिक काल जिसे भारतेंदु काल (नवजागरण काल) कहा गया, अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जागरण का काल रहा। फिर द्विवेदी युग जिसे पुनर्जागरण(जागरण–सुधारकाल) कहा गया। यह समाज में व्याप्त कुरीतियों के सुधार का काल रहा। फिर आया छायावाद तो यह काल स्वानुभुतिपरक, रहस्यमयी भावना से ओत–प्रोत रहा। इसके बाद आया प्रगतिवाद। हां! यह पहला ऐसा नामकरण था जो प्रवृत्ति विशेष के आधार पर नहीं वरन विचारधारा विशेष पर

आधारित था और वह विचारधारा थी प्रगतिशील विचार धारा। प्रगतिशील विचारधारा को समझने से पहले 'विचार धारा' शब्द को जानना आवश्यक है।

विचारधारा

विचारधारा विचारों का ऐसा समुच्चय है जो किसी विषय विशेष को समाहित करता है और मनुष्य की क्रिया–प्रतिक्रिया को प्रेरित कर सकता है या हम कह सकते हैं कि विचारधारा विचार और अवधारणाओं की एक ऐसी प्रणाली है जो समाज को, देश को, विश्व को और अपने आसपास के वातावरण की समझ को बनाने के काम में आती है। ष्अंग्रेजी के आईडियोलॉजी (ideology) के लिए हिंदी में 'विचार धारा' या 'विचार–प्रणाली' शब्द प्रयुक्त होता है। विचारधारा विचारों और दृष्टिकोणों की एक पद्धति है जिसके तहत लोग वास्तविकता तथा अपने पारस्परिक संबंधों को पहचानते और सामाजिक समस्याओं और संघर्षों का मूल्यांकन करते हैं।"[4]

प्रमुख विचारधाराएं

साहित्य के माध्यम से अनेक विचार धाराओं को प्रचारित और प्रसारित होने में सफलता मिली। मार्क्सवाद, प्रगतिवाद, समाजवाद, आधुनिकतावाद, उत्तर– आधुनिकतावाद, गांधीवादी विचार धारा, राष्ट्रवाद, अस्मिता विमर्श आदि वर्तमान समय की प्रमुख वैचारिकियां हैं। जहां मार्क्सवादी विचारधारा शोषक और शोषित के सिद्धांत को लेकर चलती है वहीं समाजवादी विचारधारा पूंजीवाद और मुक्त बाजार के सिद्धांतों के विपरीत खड़ी देखी जा सकती है। आधुनिकतावाद जहां महान आख्यानों (ग्रेट नैरेटिव्स) को लेकर अपनी बात रखता है तो वही उत्तर आधुनिकता लघु आख्यानों (स्मॉल नैरेटिव्स) को लेकर चलती है। गांधीवादी दर्शन अहिंसा, सत्याग्रह को अपना सर्वोत्तम विचार मानता है, वहीं राष्ट्रवाद 'इदं न मम, इदं राष्ट्राय' की भावना को लेकर चलता है। वैश्वीकरण बाजारवाद को साथ लेकर चलता है। सभी वैचारिकियां अपने–अपने समय में साहित्य के माध्यम से महत्वपूर्ण हस्तक्षेप करती रही हैं और आगे भी करती रहेंगी। यह स्वस्थ समाज और स्वस्थ राष्ट्र हेतु महत्वपूर्ण उपक्रम हैं।

"पिछले दो–तीन दशकों के हिंदी लेखन पर नजर दौड़ाने से यह बात स्पष्ट होती है कि इसमें पक्षधरता, विचार धारा, इतिहासबोध, कलावाद बनाम जनवाद, व्यक्ति बनाम वर्ग अथवा समाज का सवाल प्रचुर मात्रा में उठाया गया है।"5 जब तक समाज के विभिन्न समूहों और वर्गों में टकराहट है, उनके सामाजिक पुनर्रचना के सपने और आदर्श मानव जाति के निर्माण में उनकी साध है, तब तक विभिन्न विचार धाराओं का अस्तित्व यूँ ही बना रहेगा। परंतु हिंदी साहित्य में इन सवालों को लेकर कुछ अतिरेक, कुछ समझ की कमी और कुछ दलगत राजनीति का प्रभाव है।

विभिन्न विचार धाराओं का साहित्य पर प्रभाव– साहित्य का विचार धाराओं से गहरा अंतर– संबंध है। जैसा कि आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी कहते हैं कि प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है। तब यह निश्चित है कि जनता के चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है।

दलगत राजनीति से जुड़े अनेक लेखक संघ जैसे– प्रगतिशील लेखक संघ, जनवादी लेखक संघ, जन संस्कृति मंच, दलित लेखक संघ आदि संगठनों की आपसी टकराहट, विचारधारा की सैद्धांतिक बहस का कमजोर मुखौटा कभी–कभी टूटकर अशालीनता, गाली–गलौज और चरित्र –हनन में भी बदल जाता है। राजनीतिक मताग्रह दूषित होने पर किसी भी विचारधारा की बौद्धिक कड़ियां टूटने लगती हैं । यदि कोई साहित्यकार अपने साहित्यिक लेखन की गुणवत्ता के प्रति ईमानदार रहकर इन समूहों से अलग रहता है, या विपरीत विचारधारा का होता है तो इस साहित्यिक समाज में उसकी पूरी तौर पर अनदेखी सी की जाती है अथवा उसके योगदान को हल्का बनाने का प्रयास किया जाता है। इस प्रवृत्ति के कई दुष्परिणाम हमारे सामने आते हैं। विश्वविद्यालयों में नियुक्ति– प्रोन्नति की लालसा, प्रसिद्ध पत्रिकाओं में छपने की इच्छा और आलोचना के क्षेत्र में आसीन लोगों द्वारा मान्यता न मिलने के भय के कारण लेखकीय स्वायत्तता और बौद्धिक ईमानदारी का कभी–कभी हनन भी हो जाता है।

हिंदी कविता की बात करें तो अनेक आलोचक मानते हैं कि कविता में वैचारिक आग्रह बढ़ने से कला पक्ष का स्थान कम होता गया है। जीवन धीरे–धीरे जटिल होता गया है। मैकाले ने 19वीं शताब्दी में यह घोषणा कर दी थी कि जैसे–जैसे सभ्यता का विकास होता चला जाएगा, कवि–कर्म कठिन होता जाएगा। यह बात अब दिखाई दे रही है लेकिन आज भी बहुत सारे कवि हैं जो कविता के भाव पक्ष को बचाने की चिंता करते हैं। इस भाव पक्ष में सबसे जरूरी है, प्रेम–सौंदर्य, करुणा, दया, उपकार, ममता आदि। विचार हमारा सहयात्री हो सकता है और कविता में विचार को किस प्रकार हम समाज का सहयात्री बनाते हैं, यह महत्त्वपूर्ण है।

साहित्य और विचारधारा का अंतरसम्बंध

सहित्य और विचारधारा का सम्बंध पहले भी प्रासंगिक था और वर्तमान में भी प्रासंगिक है। "साहित्य और विचारधारा में घनिष्ठ सम्बंध है। किंतु विचारधारा को साहित्य का पर्याय नही कहा जा सकता। मार्क्स साहित्य में विचारधारा की प्रासंगिकता को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि विचारधारा से साहित्य को बल मिलता है। विचारधारा साहित्य को विकसित करती है। विचार क्षेत्र में विचार और विचार धाराओं का संघर्ष एक सनातन प्रक्रिया है। प्रगतिशील विचारधारा अपने स्वस्थ रुप में हमेशा प्रवाहमान रहती है। जबकि प्रतिगामी विचारधारा को कला वादियों के यहां आश्रय मिलता है। साहित्य कोई व्यक्तिगत चीज नहीं होती साहित्य की अपनी एक सामाजिक भूमिका भी होती है।"[6]

"हिंदी में रामविलास शर्मा ने इस संबंध में विचार किया है। वे साहित्य को पूर्णतः 'आईडियोलॉजिकल' नहीं मानते। उनकी दृष्टि में न तो संस्कृति केवल विचारधारा है और ना साहित्य। वे विचारधारा या विचार प्रणाली के परे भी कुछ हैं।"[7]

हिंदी कविता के संदर्भ में बात करें तो मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियाँ

'केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए, उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए' के आधार पर यह जो उपदेश शब्द है यहाँ पर इसका अर्थ एक विस्तृत रूप में विचार से भी लिया जा सकता है। विचार विहीन कविता कवि

को, मनुष्य को, समाज को पंगु बनाती है, वही वैचारिक कविता समाज को सत्य के पथ पर यथार्थ धरातल पर एक आधार भूमि प्रदान करती है।

शमशेर बहादुर सिंह मानते हैं कि देश की संस्कृति और विचारधारा के स्वस्थ विकास में कविता एक महत्वपूर्ण माध्यम है। साहित्यकारों द्वारा लिखे गए साहित्य की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है, वहीं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी अपने एक निबंध में सहित्य के सम्बंध में कहते हैं कि– मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ। जो वाग्जाल मनुष्य को दुर्गति, हीनता और परमुखापेक्षिता से बचा न सके, जो उसके हृदय को तेजोदीप्त न बना सके, जो उसके हृदय को परदुखकातर और संवेदनशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है वहीं पंत जी कहते हैं कि साहित्य अपने व्यापक अर्थ में मानव जीवन की गंभीर व्याख्या है।

निष्कर्ष

सामान्यतः प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी विचारधारा से अभिप्रेरित रहता है। परंतु एक साहित्यकार अपनी वैचारिक प्रेरणाओं को उन्नत समाज और उन्नत राष्ट्र के निर्माण हेतु अपनी सर्जना के माध्यम से निरंतर प्रकट करता रहता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आत्मा की मुक्तावस्था को ज्ञानदशा कहा है और यही ज्ञानदशा एक आइडियोलॉजी (विचार धारा) को साथ लेकर चलती है, वहीं शुक्ल जी के हृदय की मुक्तावस्था को रसदशा कहा है और यह रसदशा अपने साथ आनंद को लेकर चलती है। इन दोनों का योग एक आदर्श रचना(सहित्य) का निर्माण करता है। भिन्न–भिन्न काल–खंडों में विभिन्न विचार धाराओं की गूंज हमें इतिहास में सुनाई पड़ती है। परंतु उन्हें यदि महसूस करना हो तो साहित्य से अच्छा कोई विकल्प नही हो सकता।

संदर्भ

1. academia-edu
2. वही
3. डॉ. अमरनाथ, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, 2012, पृष्ठ – 329
4. डॉ. अमरनाथ, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, 2012, पृष्ठ दृ 328
5. संपादक बी. बी. कुमार, चिंतन–सर्जन (त्रैमासिक), 'हिंदी लेखक विचारधारा और इतिहास बोध'(सत्य मित्र दुबे), अक्टूबर–दिसंबर, 2003 वर्ष–1, अंक–2, पृष्ठ–13
6. डॉ. अमरनाथ, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, 2012 पृष्ठ –329
7. बच्चन सिह, हिंदी आलोचना के बीज शब्द, वाणी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण–1994, पृष्ठ–10